Part I Hons
I

समुद्रगुप्त का चरित्र चित्रण कीजिए

उत्तर ↘ समुद्रगुप्त की जीवनी एवं उपलब्धियाँ

गुप्त साम्राज्य को स्थापित प्रदान करने का मुख्य श्रेय समुद्रगुप्त को ही है। समुद्रगुप्त की दिग्विजयों के फलस्वरूप मगध और प्रयाग के बीच गंगा के तटवर्ती मैदानी प्रदेशों का छोटा सा राज्य बढ़ कर एक विशाल साम्राज्य बन गया। तत्कालीन प्रसिद्ध कवि हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग के प्रशस्ति लेख में समुद्रगुप्त की विजयों की तालिका दी हुयी है। इसके सम्बन्ध में पाश्चात्य इतिहासकार फ्लीट का कथन है कि इसे समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ने उत्कीर्ण कराया था क्योंकि इसमें सम्राट के यश के सम्बन्ध में त्रिदशपति भुवनावाप्त ललित सुख विचारणम के वाक्यांश लिखा गया है। फ्लीट का यह निष्कर्ष प्रशस्ति लेख के आलंकारिक वाक्यांश के आधार पर होने के कारण सर्वथा मान्य नहीं है। समुद्रगुप्त के जीवन काल में ही सम्भवत: उनकी दिग्विजय के पश्चात और अश्वमेध के पूर्व (लगभग 360 ई० यह स्तम्भ लेख खुदवाया गया था। इस अभिलेख में समुद्रगुप्त की विजयों की न तो कोई तिथियाँ है और न ही उनमें कोई तिथि क्रम है। उसकी विजयों का इस अभिलेख में परिगणन मात्र है।

Scanned with CamSc

समुद्रगुप्त की विजय — समुद्रगुप्त एक महासाहसी पराक्रमी अतुलित बलशाली और उत्साही योद्धा था। उसमें महान विजेता और कुशल सेनानायक के गुण विद्यमान थे। उसमें महात्वाकांक्षा और साम्राज्य विस्तार की उत्कट अभिलाषा भी भारी मात्रा में विद्यमान थे। उसे विजय की एक महान श्रृंखला स्थापित करने तथा अद्भुत सैनिक शक्ति सम्पन्न होने के कारण भारतीय नेपोलियन की संज्ञा दी है। उसने अपनी विजयों द्वारा एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जिसमें कई प्रकार के राज्य सम्मिलित थे। उसने सबसे पहले पाटलिपुत्र के आस पास के उच्छृंखल जागीरदारों और भू पतियों का दमन किया तथा पूर्ण रूप से आधिपत्य स्थापित किया। इसके पश्चात उसने विजयों की श्रृंखला की स्थापना की जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नप्रकार है—

आर्यावर्त के नौ राज्य — समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम उत्तरी भारत के नौ राज्यों को परास्त किया। उनकी सत्ता को पूरी तरह मिटा कर इन राज्यों को उसने अपने साम्राज्य में मिलाया। इलाहाबाद के उत्कीर्ण लेख में इनके राजाओं के नाम गिनाए गए हैं। वे नाम हैं — रुद्रदेव, मातिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, नागसेन अच्युत नन्दिन बलवर्मन तथा गणपति नाग। इनमें से नागसेन के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि वह पद्मावती के नागवंश का था। अच्युत सम्भवतः अहिच्छत्र प्रदेश में राज्य करता था। गणपति नाग का शायद मथुरा के नागवंश से सम्बन्ध था। मतिल अथवा मातिल जिसकी एक मुद्रा बुलन्दशहर में प्राप्त हुयी थी तथा जिसके आधार पर उसे बुलन्दशहर के आसपास का राजा माना गया है। वाकाटक वंशीय राजा रुद्रसेन सम्भवतः प्रवरसेन का पौत्र था समुद्रगुप्त ने जिस चन्द्रवर्मन को हराया वह एक साधारण राजा था। अन्य विद्वानों का मत है कि यह वही चन्द्र था जिसका अभिलेख बंगाल के बांकुरा जिले के सुसुनियां नामक स्थान पर मिला है। रुद्रदेव, मतिल नागदत्त, नन्दिन और बलवर्मन के राज्यों को निश्चित करना कठिन है। इन राजाओं के अतिरिक्त समुद्रगुप्त

Scanned with CamSc

ने कोटवंश के शासकों पर भी विजय प्राप्त की। कोट नामांकित सिक्के पूर्वी पंजाब और दिल्ली में मिले हैं सम्भवत: गंग

(4) आटविक राज्य - आर्यावर्त की विजय के उपरान्त समुद्रगुप्त ने विन्ध्यपर्वत के आसपास के 18 आटविक राज्यों को जीता। ये राज्य जंगलों और पहाड़ों थे उनको पराजित करके उनके राजाओं को समुद्रगुप्त को समुद्रगुप्त ने परिचारक बना लिया। उन विजयों से उसके लिए दक्षिण भारत विजयों का मार्ग खुल गया।

दक्षिणापथ के राज्य - दक्षिणापथ के राज्य समुद्रगुप्त के मूल राज्य से पर्याप्त दूर होने के कारण उनसे सम्राट को किसी प्रकार का भय न था। सम्राट ने एक उदार चेता शासक की भाँति इन राज्यों की श्री विहीन तो कर दिया, किन्तु उन्हें उनको भूमि से वंचित न किया। समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत के लगभग बारह स्वतंत्र नृपतियों को युद्ध में पराजित किया और उन्हें बन्दी बना लिया। किन्तु जब उन्होंने उनके प्रति स्वामीभक्ति की शपथ ग्रहण कर ली तो उन्हें उनके राज्य लौटाकर मुक्त भी कर दिया। इन बारह राज्यों का उल्लेख इस प्रकार है:

(1) कौशल का महेन्द्र — मध्य भारत में इस समय महाकौशल नामक एक प्रसिद्ध राज्य था जिसे कौशल भी कहते हैं। इस राज्य में वर्तमान मध्यप्रदेश के सम्भलपुर विलासपुर और रायपुर आदि क्षेत्र सम्मिलित थे।

(2) महाकान्तर का व्याघ्रराज - प्रो० राय चौधरी ने महाकन्तर को किसी स्थान विशेष स्थान विशेष का नाम न मानकर उसे मध्य भारत में स्थित कोई वन प्रान्त ही माना है। उनका कथन है कि यह वन प्रान्त सम्भवत: जासी राज्य में रहा होगा। प्रो० रामदास के मतानुसार यह प्रदेश गंजाम और विजिगापट्टम की माड़मन्ड एजेन्सी के वन्य प्रदेश थे।

(3) कौशल की मन्तराज — कुछ विद्वानों के मतानुसार, कौशल और दक्षिणी भारत का कराउ

एक स्थान है किन्तु अन्य विद्वान लेखकों ने इसे सोनपुर प्रान्त ही बतलाया है। इस प्रान्त की राजधानी यथाति नगरी थी जो महानदी के तट पर स्थित था।

5) पिष्टपुर का – महेन्द्र – मद्रास प्रांत में स्थित गोदावरी जिले का नगर पीठापुरम ही पिष्टपुर है। यहाँ का शासक नर महेन्द्र के नाम से प्रसिद्ध था।

5) कोट्टगिरि – यह सम्भवतः गोदावरी जिले के का कूर है।

6) एरण्डपल्ल – गंजाम जिले चीकाकोल नामक स्थान के निकट एरण्डपल्ली है, जिसे उस समय एरण्डपल्ल कहते थे।

7) काण्वी – मद्रास के निकट वर्तमान कांजीवरम उस समय काण्वी के नाम से प्रसिद्ध था का शासक विष्णुगोप था।

8) अवमुक्त का 'नलराज' – इतिहासकारों में अवमुक्त के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। खारवेल के हाथी गुम्फवाले लेख में आव जाति के प्रति किंचित उल्लेख मिलते हैं जिनके आधार पर यह निश्चित किया जा सकता है कि आव प्रान्त की राजधानी गोदावरी के समीप पिथुण्डा थी। यहाँ का राजा नीलराज बताया जाता है।

9) वैंगी का हस्तिवर्मन – एल्लोर में स्थित पेडडु वेगी को वेंगी कहते थे।

10) पालक्क – नेलौर जिले में स्थित पालक्क का शासक उग्रसेन था।

11) देवराष्ट्र का कुबेर – विजगापट्टम जिले में यल्लमंचली नामक स्थान का नाम देवराष्ट्र था। जहाँ के शासक कुबेर के नाम से प्रसिद्ध थे।

12) कुस्थलपुर का धनंजय – इस स्थान का अभिप्राय अरकाट जिले के उत्तर में स्थित कुट्टलर से है।

सीमान्त राज्य – इन विजयों से समुद्रगुप्त की धाक सारे भारत में जम गयी। उत्तरपूर्व के सीमान्त राज्य और पंजाब मालवा तथा मध्यप्रदेश के गणराज्य आतंकित हो गये उन्होंने सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली और कर देकर उसे सम्मानित किया। सीमान्त राज्यों में 5 का

Scanned with CamScanner

उल्लेख है। (1) समतट (दक्षिण-पूर्वी बंगाल) (2) कामरूप (उत्तरी आसाम) (3) नेपाल (4) डवाक (सम्भवत आसाम के नौ गांव जिले में स्थित और (5) कर्तृपुर। पांचवे को कुछ विद्वानों ने जलन्धर जिले में स्थित करतारपुर को माना है, कुछ ने कुमायूं गढ़वाल और रुहेलखण्ड के प्रदेशों की और कुछ ने मुल्तान तथा लोहाना के बीच स्थित करूरौर की।

स्वशासित गणराज्य – इस कोटि में नौ गणराज्य सम्मिलित थे। (1) मालव (2) आर्जुनायन (3) यौधेय (4) मद्रक (5) आभीर (6) प्रार्जुन (7) सनकानिक (8) काक और (9) खरपारिक मालव लोगों का निवास स्थान पंजाब में रावी के आसपास था। चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व में उन्होंने सिकन्दर का डटकर मुकाबला किया था। समुद्रगुप्त के समय में वे दक्षिण पूर्वी राजपूताना के समीपवर्ती प्रदेशों मेवाड़ टोंक आदि में बसे हुए थे। आर्जुनायन जाति का निवास स्थान निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता सम्भवतः वे जयपुर के आसपास कहीं बसते थे। यौधेय लोग उस प्रदेश के निवासी थे जो आज भी जोहिया हियाबार कहलाता है और जो ~~सतलज~~ सतलज के दोनों किनारों पर बहावलपुर के राज्य सीमा पर स्थित है। मद्रकों का रावी तथा चिनाव के बीच के भाग पर अधिकार था और शाकल उनकी राजधानी था। आभीरों का राज्य सम्भवतः झांसी और भिलसा के बीच में स्थित था। सनकानिक जाति भी भिलसा के आसपास कहीं निवास करती थी। काक सनकानिकों के पड़ोसी थे। भिलसा 20 मील उत्तर में काकपुर नामक एक गांव को विद्वानों ने उनकी राजधानी बतलाया है। खरपरिक की राजधानी शायद मध्यप्रदेश में दमोह के पास थी।

समुद्रगुप्त का विदेशी राज्य से सम्पर्क

सम्राट समुद्रगुप्त की इन अद्भुत विजयों और युद्ध भूमि में उनके शौर्य दिखाने की चर्चा विदेशों में भी फैलने लगी। अतः समुद्रगुप्त की भारी शक्ति से आतंकित अनेक विदेशी राज्यों ने स्वेच्छा से

आत्मसमर्पण करके उसके संरक्षण में रहना स्वीकार किया और उसे रत्नाभरण, सुन्दर कुमारियों तथा अनेक मूल्यवान पर्याप्त भेंट करके प्रसन्न रखने का प्रयास किया था। इस प्रकार के शासकों में पश्चिमी पंजाब में ~~शासक~~ शासन करने वाले देवपुत्र तथा अफगानिस्तान के शाही वंश के शासक थे। ये दोनों शासक कुषाणवंशीय थे। उनके अतिरिक्त शक, मुरुण्ड और सिंघल द्वीप के राजा के नाम भी इसी श्रेणी के शासकों में आते हैं। प्रयाग के अशोक स्तम्भ पर खुदी हुई समुद्रगुप्त की प्रशस्ति में इनका उल्लेख किया गया है। सिंघल द्वीप का शासक मेघवर्ण समुद्रगुप्त का समकालीन था। उसने एक बार अपने देश के कुछ बौद्ध भिक्षुओं को बोधगया को तीर्थयात्रा के लिए भेजा। उन्हें वहाँ भारी असुविधा हुई। मेघवर्ण को जब बौद्ध भिक्षुओं की कठिनाइ से समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा। समुद्रगुप्त ने मेघवर्ण को विहार निर्माण की आज्ञा प्रदान की। मेघवर्ण ने बोधगया में ~~अपार~~ अपार धन राशि व्यय करके एक विशाल विहार निर्मित कराया और उसमें भगवान बुद्ध की रत्नजटित मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। यह विहार महाबोधि संघाराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि समुद्रगुप्त भारत के सर्व प्रसिद्ध शासक और विजेता में से एक था।

Scanned with CamSc